ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 136-138

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मुगलकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएं

रजनीश कुमार राय

शोध अध्येता– इतिहास, गया प्रसाद स्मारक राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बारी–आजमगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received-04.05.2023, Revised-09.05.2023, Accepted-13.05.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***इस्लाम का उदय ईसा की सातवीं शताब्दी में अरब के रेगिस्तान क्षेत्र में हुआ और उसका प्रसार ईरान, मध्य एशिया तथा अफगानिस्तान से लेकर समस्त मुस्लिम उपमहाद्वीप में हुआ। उत्तर भारत में इस्लाम का आगमन 12वीं शताब्दी में हुआ। "इन देशों में घरो का निर्माण मिट्टी तथा पकी हुई ईंटों से किया जाता था, जो चिकनी टाइलों से सजाया जाता था।" "इन देशो में वे निर्माण तकनीकि जो विकसित अवस्था में थी उसमें नोकदार मेहराब, तहखाना, बगली डाट तथा गुम्बद होती थी।" इसके साथ–साथ यहाँ के घरों को अरबी सुलेखन, बेलबूटों और ज्यामितिय विन्यास द्वारा सुसज्जित किया जाता था। जिन–जिन देशों में इस्लाम का प्रचार–प्रसार हुआ, उन–उन देशों में इस्लामी वास्तुकला की उन सभी पद्धतियों पूर्ण रूप से प्रचलन हो गया था। जब मुसलमानी सेनाएँ आक्रमण के पश्चात भारत में पहुंची तो प्रारम्भ से ही भवन निर्माण की एक विकसित तकनीक भारत लेकर आये जिसका उन्होंने भवनों के निर्माण हेतु प्रयोग किया।***

कुंजीभूत शब्द– वास्तुकला, स्थापत्यकला, मेहराब, नोकदार मेहराब, तहखाना, बगली डाट, गुम्बद, अरबी सुलेखन, बेलबूटों।

भारत में मुस्लिम वास्तुकला का विकास तीन चरणों में हुआ, दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत मुस्लिम वास्तुकला का विकास स्वतंत्र क्षेत्रिय विकास के अन्तर्गत विकास और इन दोनों के परिणाम स्वरूप मुगल शैली के रूप में मुगल स्थापत्य कला का विकास। 1206 ई० के पश्चात उत्तर भारत में इल्बरी, खलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी आदि विभिन्न वंशों ने शासन किया, जिन्होंने अपने–अपने शासनकाल में भवनों का निर्माण कार्य किया और निर्माण के माध्यम से अपनी–अपनी शक्ति का परिचय दिया। इनके द्वारा निर्मित भवनों में मस्जिद, मकबरें, महल तथा किले सम्मिलित थे। भवन निर्माण कला का विकास हिन्दू तथा इस्लामी परंपराओं के मिश्रित स्वरूप पर आधारित थी।

जिस समय बाबर ने 1526 ई० में लोदी सेना को पानीपत के युद्ध में परास्त किया और भारत भूमि पर अपना आधिपत्य स्थापित किया, उस समय तक वास्तुकला के क्षेत्र केन्द्रीय एवं प्रांतीय कला राज्यों में विकास कर रही थी। मुगल आक्रमण के पश्चात बाबर से लेकर औरंगजेब तक महान मुगलों के काल में भवन निर्माण की विशेषता, विविधता तथा सुन्दरता की तुलना गुप्त काल से की जा सकती है। "मुगल पादशाहों में अकबर ने आर्थिक, राजनीतिक तथा क्षेत्रिय सुदृढीकरण की नीति अपनाई, जिसकी प्रक्रिया प्रयोगात्मक तौर पर दिल्ली सल्तनत के काल में शुरू हो गई थी।"[1] मुगल शासको के शासनकाल में जिस पैमाने पर सत्ता तथा संसाधनों का केन्द्रीयकरण हुआ वैसा केन्द्रीयकरण पहले कभी नहीं हुआ था। जिसका परिणाम यह हुआ कि बादशाह की शक्ति में वृद्धि हुई, जिससे शासक वर्ग ने नये संसाधनों और वृहद माध्यमों की खोज शुरू कर दिया। शासन सत्ता के केन्द्रीयकरण के माध्यम से संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला आदि को दिये गये संरक्षण मे दिखाई देता है। इन्ही सब अनुकूल परिस्थितियों तथा व्यक्तिगत पसंद एंव रुचि ने भवन निर्माण की कला को प्रभावित किया। विभिन्न मुगल बादशाहों के शासनकाल में कला की अभिव्यक्ति विभिन्न शैलियों में हुई। प्रत्येक शासक के शासनकाल की अपनी अलग–अलग विशेषता होती थी। इन सभी विभिन्नताओं के होते हुए भी मुगलकालीन कला की अपनी एक अलग पहचान भी है जिसे मुगलकालीन कला का नाम दिया जाता है। मुगलकालीन कला के आधार पर मुगलकालीन वास्तुकला, सल्तनतकालीन वास्तुकला और प्रांतीय वास्तुकला में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है।

मुगल शासको द्वारा भवन निर्माण का कार्य बड़ें पैमानें पर किया गया। मुगल भवन निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर योजना तैयार की जाती थी जिसमें लौकिक उपयोग से लेकर धार्मिक उपयोग में आने वाले भवनो को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। इनमे से अनेक भवन आज भी उपस्थित हैं। धन तथा संसाधनों की अधिक उपलब्धता के कारण अधिक विशाल भवनों का निर्माण हुआ और उसके निर्माण मे उत्तम किस्म के सामग्री का उपयोग किया गया जो सल्तनत के शासको और क्षेत्रीय शासकों के स्रोतों में सम्भव नहीं था। बलुआ पत्थर और बाद में संगमरमर के विशाल भवनों का निर्माण किया गया। इससे पूर्व सल्तनत काल के और क्षेत्रीय इलाकों मे किये गये भवन निर्माण में रोड़ी व कभी–कभी बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया था।

भवन निर्माण में अब मुख्य रूप से आयोजन को महत्व दिया जाने लगा। मुख्यतः अकबर और शाहजहाँ के काल में भवनों का ब्यौरेवार खाका बनाकर तैयार किया जाता था तथा छोटी व बड़ी बातों का ध्यान दिया जाता था। "अकबर के संरक्षण में तैयार किये गये लघुचित्रों में अकबर को फतेहपुर सीकरी, आगरे का किला आदि के निर्माण का स्वयं निरीक्षण करते हुए दर्शाया गया है।"[2] ऐसा प्रतीत होता है कि शिल्पकार को अपनी कला का स्वतंत्र अभिव्यक्ति करने का अवसर नहीं दिया गया। 300 वर्षों के प्रयोगों के पश्चात भवन निर्माण प्रद्योगिकी स्पष्ट योजनाबद्ध रूप से विकसित हुई। इस विकास और प्रगति की प्रारम्भिक क्रमबद्ध परिणति फतेहपुर सीकरी आदि नगरों के निर्माण मे चरम परिणति शाहजहाँ के शाहजहाँनाबाद नगर के निर्माण में दिखाई देती है। यह कहा जा सकता है कि मुगलकाल से पूर्व भवन निर्माण में प्रबंध और आयोजन इतना विकसित नही था तथा उस समय संसाधन भी सीमित मात्रा में थे। केवल फिरोजशाह तुगलक ने ही कल्पनाशील और कुशल आयोजन का प्रदर्शन किया, परन्तु सल्तनत काल के अन्य शासकों में इस गुण का सामान्यतः आभाव ही था। परिणामस्वरूप मुगलकाल से पूर्व की भवन निर्माण कला में अनेक अवयवों का जमघट है और अलग–अलग आयोजनों और निर्माणों में केवल मौलिक परंपरा का ही सहारा लिया गया है। जैसे सल्तनत काल के शासकों ने मकबरों और मस्जिदों

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

का एकीकृत निर्माण नहीं किया। पहली बार इसका संकेत लोदी शासको ने दिया जो कि लोदी काल में निर्मित मकबरों में देखने को मिलता है। परन्तु इस एकरूपता में पूर्णता मुगल शासकों के शासनकाल में ही आयी।

यदि मुगलकाल के पहले की वास्तुकला की विशेषता को देखा जाये तो यह कहा जा सकता है कि वह पारंपरिक अमूर्त तथा अनुकरण योग्य थी। उसमे ज्यादातर बार–बार एक ही तरह की सामग्री तथा अभिकल्पना का प्रयोग किया गया है। दूसरी ओर "मुगलकालीन वास्तुकला में विविधता है और उसमें संरचनात्मक सिद्धान्तों और अभिकल्पना की सम्भावनाओं की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।"[3] "मुगल शासकों द्वारा प्रथम बार आकार तथा डिजाइन की विविधता के सम्बंध में प्रयोग किया तथा सामग्री के रूप में पत्थर के अलावा पलस्तर एंब गचकारी की ओर विशेष ध्यान दिया।"[4] विभिन्न प्रकार की निर्माण सामग्री के प्रयोग के अतिरिक्त भवनों के अलंकरण के काम में ज्यादातर नियंत्रण देखने को मिलता है। इस संदर्भ में संगमरमर के पत्थर पर जवाहरात से की गई जड़ावत को विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है जो एक सुव्यवस्थित अनुपात पर आधारित है। "अकबर और शाहजहाँ के काल में संगमरमर और बलुआ पत्थर पर पच्चीकारी और अलंकरण विशेष रूप से देखने को मिलता है जो इसके पहले नही दिखाई देता था, जो मुगलकालीन शासको के भवन निर्माण की प्रमुख विशेषता है।"[5]

मुगलकालीन निर्माणों मे स्थान के उपयोग पर आधारित विधि के अतिरिक्त सामंजस्य एवं खाली और निर्मित स्थान के मध्य संतुलन कायम करने पर प्रमुखता से ध्यान दिया गया है। मुगल शासनकाल में बनाये गये नगर तथा किले देखने में बड़े एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्मित किये गये हैं। सामंजस्य तथा संतुलन की दृष्टि से यह उल्लेख किया जा सकता है कि मुगल शासको द्वारा निर्मित भवनों का प्राकृतिक परिवेश पूरी तरह से सामंजस्य से पूर्ण है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि तुगलक काल के भवनो में यह विशिष्टता पहले से ही दिखाई देती है। "मुगल काल में बनाये गये भवनों के समतल घरातल का प्रा. तिक परिवेश से सामंजस्य करने की कोशिस की गई है और इस तरह के सामंजस्य को उजागर करने के लिए कोने पर बनाये गये मीनारों और पुश्तों का उर्ध्वाधर निर्माण किया गया है।"[6] यह मुगलकालीन भवनो की प्रमुख विशेषता है। "मुगलकाल मे समतल निर्माण को महत्व देने के लिए बहुतलीय भवनों का निर्माण नहीं किया गया तथा मीनार आदि उर्ध्वमुखी मीनारों को कम से कम रखा गया है।"[7] मीनारों को बुर्जियों के रूप में बनाया गया है तथा उसकी ऊँचाई अधिक नही रखी गई है। उनको मुख्य इमारत से अलग निर्माण के रूप में भी निर्मित नही किया गया है। मुगलकालीन जालीदार दीवारों का निर्माण बिना विचारे नहीं किया गया है। उनका निर्माण ज्यादातर अंदरूनी भागों में या ऐसे स्थानो में किया गया है जहाँ उन पर प्रकाश पड़ने से रहस्यमय .श्य दिखाई पड़े।

"मुगलों ने भवनों के सौंदर्य सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए उद्यानो तथा स्वतंत्र उद्यानो के निर्माण की विशेष कला का भी विकास किया। उनके द्वारा बनवाये गये सभी अकबरों में फारसी चारबाग पद्धति के चौकोर उद्यानो का सांकेतिक प्रदर्शन किया गया है।"[8] "इस्लाम धर्म की पौराणिक कथाओं मे हस्त–विहिस्त (आठ स्वर्ग) के रूप में स्वर्ग की कल्पना की गई है। ये उद्यान धरती पर इस कल्पित स्वर्ग के प्रतीक हैं।"[9] इनके द्वारा शाही कब्र के आस–पास एक घेरा बना दिया जाता था। सम्भवतः ऐसा करने का उद्देश्य मृतक को और उसके पूरे वंश को दैवी ऊर्जा दिये जाने का प्रयास किया जा रहा है। इस दृष्टि से मुगल मकबरे बादशाहों को धार्मिक प्रभुत्व का अधि ाकार दिलाने में सहायक माने जा सकते हैं।

पूर्व काल की अपेक्षा मुगलकाल में राज्य व्यवस्था मिश्रित थी। मुगलकाल में हिन्दू एंव मुस्लिम संस्कृतियों तथा रिवाजों का संयोजन हुआ। उस समय के सरदारों, प्रशासन, धर्मो तथा सामाजिक प्रवृत्तियों में तथा कला में इसी मिश्रित व्यवस्था की झलक देखनें को मिलती है। सल्तनत काल में भारतीय इस्लामी वास्तुकला में काफी विकास हो चुका था। खिलजियों, तुगलकों और लोदी वंश के काल में हिन्दू और इस्लामी शैलियों के मिश्रण की प्रवृत्ति पहले से ही दिखने लगी थी। मुगलों ने इसी प्रवृत्ति का विस्तार किया। कला शैलियों निर्माण तकनीकि और अलंकरण में न केवल हिन्दू और इस्लामी शैलियों का मिश्रण हुआ वरन उनमें अब फारसी एंव तुर्की परंपराओं का भी मिश्रण किया गया। "मुगल वास्तुकला में फारस, तुर्की, मध्य एशिया, गुजरात, बंगाल, जौनपुर आदि सभी स्थानों की परंपराओं का अभूतपूर्व मिश्रण हुआ।"[10]

संक्षिप्त रूप से यह कहा जा सकता है कि मुगल वास्तुकला में उस प्रक्रिया का चर्मोत्कर्ष हुआ जिसके अन्तर्गत 13वीं शताब्दी में भारतीय इस्लामी वास्तुकला का प्रारम्भ हुआ था। उदाहरण के लिए फिरोजशाह कोटला में बने महलों के परिसर को लिया जा सकता है। इसका निर्माण, फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में करवाया था। यह भारतीय–मुस्लिम मिश्रित शैली का पहला नमूना है। इसके थोड़े से अवशेष मौजूद हैं। इसके ढाँचे के मूल संयोजन से शाही किलों के निर्माण की एक शैली स्थापित हुई। ऐसा लगता है कि दिल्ली, आगरा तथा लाहौर के विशाल किलों की बनावट के केन्द्र में यही शैली रही है। इसके अतिरिक्त तुगलक तथा लोदी वंश के शासनकाल मे चौकोर तथा अष्टभुजाकार मकबरों वाली दो प्रमुख शैलियाँ सामने आई। यह विशेषता परवर्ती काल के अधिकांश मुगलों के मकबरों की वास्तुकला में दिखाई देती है। दिल्ली की शाही भवन निर्माण शैली और प्रांतीय शैलियों में जो प्रवृत्तियाँ उपस्थित थी, उनकी तार्किक परिणति मुगल वास्तुकला में देखने को मिलती है। "मुगलकला में जिन प्रवृत्तियों ने स्थायी रूप लिया, वे वास्तुकला मे संतुलन, सामंजस्यपूर्ण आयोजन और एकीकरण की प्रवृत्तियाँ थी।"[11] इन सभी प्रवृत्तियों में उन सभी भवन निर्माण शैलियों का संयोजन है जो मध य एशिया, फारस से लेकर भारतीय उपमहाद्वीप के प्रांतीय राज्यों में प्रचलित थी।

मुगलकाल के बारे में यह उल्लेख किया जा सकता है कि मुगल शासकों द्वारा जिस सामग्री को भवन निर्माण के लिए चुना गया, उसके प्रयोग द्वारा ही ऐसे उत्तम भवनों का निर्माण सम्भव हो सका। अकबरी इमारतों में प्रयोग किया गया लाल पत्थर सख्त और ठोस है लेकिन उन्हें विभिन्न आकारों में गढ़ा गया जिसके फलस्वरूप व सख्त दिखाई नही देता। "शाहजहाँ के काल में चिकने किये

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

गये संगमरमर के प्रयोग द्वारा ऐसे आकारों का निर्माण किया गया, जो कि स्वर्गीय तथा अध्यात्मिक भावनाओं की अनुभूति कराते है क्योंकि प्रयोग में लायी गई सामग्री का सफेद रंग ही पवित्रता और उच्च भावनाओं का द्योतक है।"[12] इस प्रकार ऐसे भवनों के निर्माण के द्वारा केवल कलाकृतियों का ही निर्माण नही किया गया वरन ऐसे सौंदर्य का सृजन किया गया जो कि भौतिक होने के साथ–साथ अध्यात्मिक भी है। ऐसा लगता है कि यह क्रियाकलाप उस वैचारिक आचार का अंग है, जिसका निर्माण दरबारी समारोहों और मुगल सम्प्रभुता को अध्यात्मिक दर्जा प्रदान किये जाने वाले विचारो द्वारा बहुत ही सावधानीपूर्वक किया गया।

मुगल स्थापत्यकला जिसका विकास बाबर के भारत आने के बाद हुआ वह बाद के मुगल पादशाहों के शासनकाल में अपने चरम सीमा को प्राप्त कर लिया। बाबर के भारत आगमन के पश्चात भारत और मध्य एशिया का सांस्कृतिक सम्बंध फिर से जुड़ गया। मुगल पादशाहों ने भारत की संस्ति को ईरानी संस्कृति के स्तर पर लाने का प्रयास किया। इस तरह से सांस्कृतिक संसार में मुगल साम्राज्य आश्चर्य सिद्ध हुआ। सभी मुगल शासक इस क्षेत्र मे अपनी विद्वता का परिचय अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रदान किया। उन्होने अपनी प्रतिभा का परिचय केवल प्रशासन के ही क्षेत्र में नहीं दिया वरन सांस्कृतिक क्षेत्र में भी खूब विकास किया, जिसमे स्थापत्यकला का विकास भी उसका एक अंग है। इस तरह से मुगल दरबार मे समरकंद, ईरान, इटली, फ्रांस आदि देशों के शिल्पकारों को प्रश्रय प्रदान किया गया। जहाँ पर सभी लोग अपनी–अपनी शैली का प्रदर्शन करके मुगल स्थापत्यकला शैली के विकास में अपना अनमोल सहयोग दिया, परन्तु इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि मुगल स्थापत्यकला शैली विदेशी शैलियों का मिश्रण मात्र थी। सच बात तो यह है कि यहाँ पर विदेशी शैलियों को भारतीय रीति–रिवाजों के अनुरूप ढाला गया।

हैवेल के अनुसार– "मुगल स्थापत्यकला भारतीय स्थापत्य कला के आदर्शों की पुनरावृत्ति थी, क्योंकि तैमूर भारत आक्रमण के समय बहुत से शिल्पकारो को समरकंद ले गया और वे बाबर के आगमन के फलस्वरूप भारत वापिस चले गये।"[13] इस तरह से कहा जा सकता है कि उनकी स्थापत्यकला शैली में विदेशी प्रभाव का बहुत ही सुन्दर समन्वय दिखाई देता है। फर्ग्यूसन के अनुसार– "स्वाभाविकता, मोहकता तथा अल्पता इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। स्मिथ इसको 'इण्डो पर्शियन शैली' तथा अन्य इसे 'इण्डो सारसेनिक शैली की संज्ञा से विभूषित करते हैं।"[14] उनके अनुसार, "इसका उद्गम पाश्चात्य संस्ति से हुआ है, परन्तु स्मिथ का यह विचार भ्रामक लगता है। लेकिन इससे यह स्पष्ट किया जाता है कि विदेशी प्रभाव मुगल स्थापत्यकला में अवश्य था किन्तु उसको भारतीय स्थापत्यकला मे स्थान देने से पहले यहाँ के पर्यावरण में ढालकर उनको भारतीय स्वरूप देने का प्रयास किया गया।"[15] इसलिए मुगल स्थापत्यकला को पूरी तरह से भारतीय प्रभाव से मुक्त करना एक बड़ी भूल होगी। स्थापत्यकला के क्षेत्र में मुगल शासकों का मुख्य योगदान भवनों के साथ–साथ बाग–बगीचों की योजना भी है, जिसके माध्यम से गर्मी से भी कुछ राहत मिलती थी। इन वृक्षो को हरियाली से युक्त रहने के लिए पानी की जरूरत पड़ती थी, जिसके लिए मुगल शासकों ने नहरों का भी निर्माण करवाया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्मिथ, अकबर दि ग्रेट मुगल, पृ०–225.
2. अबुल फज़्ल, अनु० ब्लाकमैन, आइन–ए–अकबरी खण्ड–1, पृ०–232.
3. पर्सी ब्राउन, इण्डियन आर्किटेक्टर (इस्लामिक पीरियड), पृ०–100.
4. वही।
5. वही।
6. फग्युर्सन, ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, भाग 2, पृ०–247.
7. वही।
8. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, पृ०–146.
9. वही।
10. इरफान हबीब, द अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इण्डिया, (1556–1707),पृ०–213.
11. इब्न हसन, द सेन्ट्रल स्ट्रक्चर ऑफ मुगल एम्पायर, पृ०–196.
12. वह ॥
13. हैवेल, दि इण्डियन आर्किटेक्चर, पृ०–218.
14. फग्युर्सन, ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, भाग 2, पृ०–297.
15. वही।

*****